पाठ 20

बूँद -बूँद से ही घड़ा भरता है

● **संकलित**

आइए, सीखें : पत्र लेखन की विधा का ज्ञान। जीवन में बचत का महत्व। ♦ दिए गए शब्दों का संधि विच्छेद करना।

8/10 आदर्श नगर

ए.बी. रोड, इन्दौर म.प्र.

06 अक्टूबर 2007

प्रिय पुनीत,

शुभाशीष,

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। तुम स्वस्थ रहते हुए मेहनत से पढ़ रहे हो, जानकर संतोष हुआ।

बेटा! तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि तुम्हारी पवित्रा दीदी ने कम्प्यूटर खरीद लिया है। सच कहूँ तो इसका पूरा श्रेय तुम्हारी दीदी को ही जाता है। घर की स्थिति तो तुम जानते ही हो, कम्प्यूटर के लिए एक साथ इतने सारे रुपयों की व्यवस्था करना मेरे लिए असंभव था। पवित्रा ने मुझे अपने बचत-खाते की पास-बुक दिखाई, मैं चौंक गई, उसने पन्द्रह हजार रुपये जमा कर लिए थे।

पवित्रा दीदी अपनी छात्रवृत्ति की राशि एवं मेरे द्वारा भेजे गए रुपयों को डाकघर के बचत खाते में जमा कर देती थी। अपनी सीमित आवश्यकता के अनुसार वह थोड़े-थोड़े रुपये ही निकालती थी। फलत: वह अपव्यय से भी बची रही और प्रति माह कुछ रूपये बचाती रही। मितव्ययता से क्रमश: बचायी गई राशि इतनी बड़ी पूँजी बन गई, कि मुझे थोड़े ही रुपये मिलाने पड़े और घर में कम्प्यूटर आ गया। आज के तीव्रगामी परिवेश में कम्प्यूटर के ज्ञान से जहाँ दीदी की बौद्धिक क्षमता का विकास होगा, वहीं रोजगार के अवसर भी प्राप्त होगें।

बेटा पुनीत! मैं चाहूँगी कि तुम भी दीदी की ही तरह प्रतिमाह मिलने वाले रुपयों को बचत-खाते में रखो, जब जैसी आवश्यकता हो थोड़ा-थोड़ा निकालो। अपने खर्च करने के ढंग पर ध्यान दो और अपव्यय से बचने का पूरा प्रयास करो। तुम भी दीदी की तरह भविष्य में एक बड़ी पूँजी एकत्रित करने में सफल हो जाओगे। बेटा! बचत खाते में रुपये रखने से अनेक लाभ होते हैं। जैसे-पैसों का हिसाब रहता है, हाथ में अधिक रुपये न होने से व्यर्थ की चीजों के लिए जी नहीं ललचाता, 'मितव्ययता' के गुण का विकास होता है,

शिक्षण संकेत -

♦ पत्र विधा की जानकारी दें । ♦ पत्रों के द्वारा विचारों के आदान-प्रदान का महत्व बताएँ। ♦ जीवन में मितव्ययता का महत्व बताएँ। ♦ अपव्यय से होने वाली हानियाँ बताते हुए बच्चों को बचत करने हेतु प्रोत्साहित करें। ♦ कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें। बच्चों को अपने मित्र अथवा रिश्तेदारों को पत्र लिखने हेतु कहें।

अपव्यय पर रोक लगने से बचत भी होती है तथा बैंक से लेन-देन की प्रक्रिया का व्यवहारिक ज्ञान भी प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार 'एक पंथ दो काज' ही नहीं 'एक पंथ अनेक काज' सिद्ध होते हैं।

पुनीत! तुम्हें आश्चर्य होगा कि तुम्हारे द्वारा की गई छोटी-छोटी सी बचत जहाँ तुम्हारी निजी बड़ी आवश्यकता पूर्ति में सहायक होती है, वहीं व्यापक रूप में राष्ट्रीय बचत तथा राष्ट्र के विकास का अंग बनती है। जानते हो, इस बचत राशि का उपयोग विभिन्न सार्वजनिक-हित के कार्यों में होता है। अतः हम अपनी बचत करने की एक छोटी सी अच्छी आदत से अप्रत्यक्ष रुप में राष्ट्र की सेवा भी करते हैं।

तुमने पाँच सौ रुपये मंगवाए हैं, भिजवा रही हूँ। अभी पिछले सप्ताह ही तुम्हें रुपये भिजवाए थे, इतनी जल्दी क्या आवश्यकता पड़ गई?

मेरे कहने का अर्थ यह कदापि नहीं कि पाई-पाई को दाँतों से पकड़ो। हाँ, मैं यह जरुर चाहूँगी कि खर्च करने से पूर्व 'आगा-पीछा सोच लेना चाहिए। पैसे के स्थान पर पैसा ही काम आता है। तुम विद्यार्थी जीवन में हो, तुम्हें यह सदैव याद रहे 'क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थ च साधयेत्' अर्थात् एक-एक क्षण बचाकर (उसका सदुपयोग करके) ही विद्या प्राप्त की जा सकती है और एक-एक पैसा बचाकर ही धन का संग्रह हो पाता है। मुझे विश्वास है, कि तुम मेरी बात को अवश्य ग्रहण करोगे- बूँद-बूँद से ही घड़ा भरता है।

पिताजी एवं दीदी की तरफ से सस्नेह आशीष।

पत्र द्वारा अपनी प्रगति से अवगत कराते रहना।

शेष कुशल

तुम्हारी माँ

पुनीत

कक्षा 8 वीं विवेकानन्द विद्याभवन,

तात्याटोपे नगर, भोपाल (म.प्र.) 462001

नए शब्द

श्रेय = यश। **तीव्रगामी** = तेज गति वाला। **बौद्धिक** = बुद्धि संबंधी, । **क्षमता** = सामर्थ, सामर्थ्य। **परिवेश** = आसपास का वातावरण। **व्यापक** = बड़े रूप में, विस्तृत। **अपव्यय** = दुरुपयोग। **छात्रवृति** = छात्र को पढ़ाई के लिए मिलने वाली राशि। **अप्रत्यक्ष** = जो सामने न हो, जो दिखाई न दे। **प्रगति** = उन्नति, विकास। **मितव्ययता** = कम खर्च करने का भाव।

अनुभव विस्तार

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

(क) सही जोड़ी बनाइए –

सब लोगों से संबंधित	–	अनावश्यक
जो आवश्यक न हो	–	मितव्ययता
बिना सोचे समझे व्यर्थ व्यय करना	–	सार्वजनिक
सोच–समझकर खर्च करना	–	अपव्यय

(ख) दिए गए शब्दों से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(अ) हम अपनी बचत की आदत से .....रूप से राष्ट्र की सेवा भी करते हैं।
(प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष)

(ब) बदलते परिवेश में.....के ज्ञान से बौद्धिक विकास होगा।
(कम्प्यूटर, सिनेमा)

(स) न अधिक रुपया .....में रहेगा और न ही व्यर्थ की चीजें लेने को जी ललचाएगा। (हाथ, साथ)

(द) छोटी–छोटी सी बचत निजी बड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति में.....होती है। (बाधक, सहायक)

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

(अ) पवित्रा ने रुपये किस प्रकार एकत्रित किए?

(ब) पवित्रा ने किन रुपयों से कम्प्यूटर खरीदा?

(स) कम्प्यूटर से क्या लाभ हैं?

(द) पुनीत कहाँ रहता था?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(अ) माँ ने पत्र में पुनीत को क्या सलाह दी?

(ब) हम अपने बचत के पैसे कहाँ–कहाँ जमा करा सकते हैं?

(स) बचत की राशि से किस प्रकार राष्ट्र–सेवा होती है?

(द) सोच समझकर पैसा खर्च करने से क्या–क्या लाभ हैं?

(ई) इस पत्र में निहित शिक्षा को स्पष्ट कीजिए।

भाषा की बात–

1 **बोलिए और लिखिए** –

श्रेय, व्यवस्था, मितव्ययता, राष्ट्र

2. **शुद्ध वर्तनी वाले शब्द पर गोला लगाइए** –

स्थीति, स्थिति, सस्थित, स्थिती

प्रसन्नता, प्रसनता, प्रशन्नता, परसन्नता

व्यवहारिक, व्यव्हारिक, व्यावहारिक, व्यावहरिक

अप्रत्यछ, अप्रत्यक्ष, अपरत्यक्ष, अप्रत्यकक्ष

3 **निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए**–

एक पंथ दो काज, जिसकी लाठी उसकी भैंस, जी ललचाना, आगा पीछा सोचना, बूँद–बूँद से घड़ा भरना।

4 **प्रत्यक्ष शब्द में 'अ' उपसर्ग लगाने से उसका विलोम शब्द 'अप्रत्यक्ष' बनता है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में 'अ' लगाकर विलोम शब्द बनाइए**–

ज्ञान, संभव, हित, व्यवस्था, व्यावहारिक

5 **उदाहरण के अनुसार सन्धि विच्छेद कीजिए** –

शुभ + आशीष = शुभाशीष

= चिकित्सालय

= शुभागमन

= प्रधानाध्यापक

= विद्यालय

अब करने की बारी

- अपने बड़ों या शिक्षक के सहयोग से पास स्थित किसी डाकघर अथवा बैंक में जाकर पैसों के लेन–देन का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कीजिए।
- 'बूँद–बूँद से घड़ा भरता है' इस उक्ति को चरितार्थ करने वाली किसी कहानी अथवा सत्य घटना को खोजकर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।